काव्य में राष्ट्रीयता : दिनकर और नेपाली के प्रसंग में

शवनम कुमारी

दिनकर जी दीर्घ आकार के एक स्वस्थ, सुन्दर और तेजस्वी व्यक्ति हैं। सन् 1952 में नौकरी से त्याग–पत्र देकर ये राज्य–सभा के सदस्य हो गए। सन् 1956 में ये राष्ट्रभाषा आयोग के सदस्य नियुक्त हुए। इस समय ये संगीत नाटक एकेडमी, साहित्य एकेडेमी एवं ऑल इंडिया रेडियो की परामर्शदात्री समिति के सदस्य हैं। पिछले वर्षों में अनेक सद्भावना–मंडलों के साथ ये संसार के अनेक देशों का भ्रमण कर आए हैं। सन् 1959 में 'पद्म भूषण' की उपाधि देकर राष्ट्रीय सरकार ने इन्हें सम्मानित किया है। देश के अनेक नेताओं और साहित्यकारों से ये घनिष्ठ रूप से परिचित हैं। इस प्रकार कठोर संघर्ष के उपरान्त इनका जीवन समय अपनी उन्नति के शिखर पर है।'

गोपाल सिंह नेपाली छायावादोत्तर काव्य –परिदृश्य पर एक सशक्त किंतु सहज गीतकार के रूप में उभरे। अभिव्यक्ति के स्तर पर गीत एक सशक्त काव्य–विधा बनी और स्वीकृत होकर साहित्य में विकसित हुई। इसके कई कारण थे। एक तो छायावादी कवियों की गीत–रचना उसकी पृष्ठभूमि बनी तथा दूसरा संप्रेषणीयता के स्तर पर गीतों में प्रभावान्वित की क्षमता अधिक थी। चूंकि गोपाल सिंह नेपाली मंच के कवि थे। मंचों के माध्यम से इनके गीत जनसाधारण को प्रभावित ही नहीं करते थे, प्रेरित और प्रोत्साहित भी करते थे। वे सीधे श्रोताओं तक पहुंचकर उनके दिलों को छू लेते थे और स्थायी जगह बनाकर कंठ के जरिए अधरों पर उतर आते थे। कवि–सम्मेलनों में श्रोता उनके गीतों की पंक्तियों को गुनगुनाते हुए झूमने लगते थे। ऐसी खासियत भरे गीतों के जरिए 'नेपाली' ने जन–मन के अमर गायक बनकर (राष्ट्रीय) कवि के रूप में उभरकर अपने समकालीनों के बीच अपना अलग अस्तित्व बनाए रखा। यही कारण है कि हिंदी–साहित्य में 'गीतों का राजकुमार' कहलाने का गौरव गोपाल सिंह नेपाली को हासिल हुआ, सिर्फ 'नेपाली' को।